इंडियन ऐपीलेपसी एसोसिएशन द्वारा आयोजित राष्ट्रव्यापी संगोष्ठी समारोह में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

(दिनांक–17.02.2017, समय–अपराह्न–07: 00 बजे, स्थान–होटल मौर्या, पटना)

इंडियन एपीलेपसी एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो॰ (डॉ॰) सतीश जैन, इंडियन एपीलेपसी सोसाइटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ॰ बी॰बी॰ नाडकरनी, महासचिव प्रो॰(डॉ॰) मनमोहन मेहदीरत्ता, आई॰जी॰आई॰एम॰एस॰, पटना के निदेशक प्रो॰(डॉ॰) एन॰आर॰विश्वास, सम्मेलन आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ॰ गोपाल प्रसाद सिन्हा, सचिव डॉ॰ अशोक कुमार, डॉ॰ ए॰के॰ अग्रवाल तथा देश–विदेश से आए प्रख्यात चिकित्सकगण, गणमान्य अतिथिगण, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों !!

मुझे काफी प्रसन्नता और संतोष का अनुभव हो रहा है कि आप सभी 'मिरगी' जैसे भयावह रोग एवं इससे जुड़ी सामाजिक भ्रांतियों पर चर्चा करने के लिए दूर–दूर से बिहार की धरती पर पधारे हैं। मुझे बताया गया है कि इस विषय पर इस तरह की राष्ट्रीय संगोष्ठी बिहार में पहली बार आयोजित हो रही है।

इस संगोष्ठी का आयोजन 'इंडियन एपीलेपसी एसोसिएशन' (बिहार शाखा) एवं न्योरोलॉजी विभाग, आई॰जी॰आई॰एम॰एस॰ पटना के द्वारा किया गया है। इंडियन एपलेपसी एसोसिएशन एक सक्रिय सामाजिक संस्था है, जो लोगों में, खासकर मिरगी रोग की समस्या और निदान के प्रति जागरूकता पैदा करती है। डॉ॰ गोपाल प्रसाद सिन्हा, डॉ॰ ए॰के॰ अग्रवाल एवं डॉ॰ अशोक कुमार के प्रयास से पूरे देश एवं विदेशों से जाने–माने न्यूरोलॉजिस्टों का पटना में आगमन हुआ है। इंडियन एपीलेपसी सोसाइटी अपने शैक्षणिक दायित्वों को भी पूरा

करती है तथा चिकित्सकों को इस रोग के बारे में हुए नये शोध–निष्कर्षों से भी अवगत कराती है।

यह बहुत खुशी की बात है कि इस आयोजन में चिकित्सकों के साथ–साथ मरीज भी भाग ले रहे हैं। मिरगी रोग की आधुनिक जाँच एवं इलाज की विधियों पर चर्चा के लिए आयोजित इस संगोष्ठी के माध्यम से एक ओर जहाँ चिकित्सकों के ज्ञान में वृद्धि होगी, तो दूसरी ओर मरीज तथा इनकी देख–रेख में लगे परिजनों को भी इससे सुविधा होगी। आमतौर पर मिरगी के मरीजों को आग, पानी, वाहन–परिचालन आदि से दूर रखा जाता है। चिकित्सकों का सुझाव है कि इस रोग से ग्रस्त बच्चों को शिक्षा हेतु नियमित विद्यालय भी भेजना चाहिए, इससे कोई हर्ज नहीं, बस थोड़ी सावधानी अपेक्षित है। बहुत सारे लोग लड़कियों में होने वाले ऐसे रोग को छिपा कर रखते हैं। वे सोचते हैं कि इस रोग की वजह से उनकी बच्ची की शादी में परेशानी होगी। ऐसी बात नहीं है। कोई भी रोग हो, उसे छिपाना, उस रोग का वास्तविक इलाज नहीं है। इस रोग से ग्रसित महिलाओं की शादी हो सकती है, नौकरी कर सकती हैं, माँ बन सकती हैं। कही कोई दिक्कत नहीं है। आप सभी अवगत हैं कि कुछ नामी हस्तियों को भी मिरगी के दौरे पड़ते थे, परन्तु वे जीवन में बहुत अच्छा मुकाम हासिल कर सके। महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्स्टाइन, महान साऊथ अफ्रीकन क्रिकेटर जॉन्टी रोड्स इत्यादि इसके प्रमुख उदाहरण रहे हैं। वस्तुतः इन मरीजों को शिक्षा के साथ–साथ, खेलकूद एवं व्यक्तित्व–विकास हेतु अन्य अवसरों से वंचित नहीं रखना चाहिए। समाज में फैली भ्रांतियों के कारण, इस रोग में दौरे के समय कुछ गलत चीजों को सुंघाया जाता है, कोई नाक दबाकर रखता है। यह कभी–कभी जानलेवा सिद्ध होता है। दरअसल, ऐसे समय में चिकित्सक की सलाह पर चलना चाहिए। इस आयोजन में मरीजों का शामिल होना एक अच्छी बात है। कुछ

मरीज Vienna (Austria), बैंगलौर, केरल, मुम्बई एवं बिहार के विभिन्न शहरों से आए हैं। आशा करता हूँ कि वे इस कान्फ्रेंस में अवश्य लाभान्वित होंगे।

आशा है, इस सम्मेलन के माध्यम से आमजन में यह संदेश जाएगा कि मिरगी के रोगों का इलाज संभव है और यह अन्य बीमारियों की ही तरह है, जिसका अगर ठीक से इलाज हो, तो इसे नियंत्रित किया जा सकता है। मरीज को झाड़–फूंक एवं सामाजिक भ्रांतियों आदि से बचाना चाहिए। अस्पताल में ले जाकर सही ढंग से इनका इलाज कराना चाहिए।

मित्रों, राज्य एवं केन्द्र सरकार दोनों स्वास्थ्य–सुविधाओं के विकास के लिए निरन्तर प्रयासरत हैं। बिहार में भी ग्रामीण एवं प्रखंड स्तर पर प्राथमिक स्वास्थ्य–केन्द्रों एवं जिला मुख्यालय के अस्पतालों में स्वास्थ्य–सुविधाओं के विकास एवं निःशुल्क दवा–वितरण के कार्य किये जा रहे हैं। राज्य के विभिन्न अस्पतालों को सुपर स्पेशलिटी हॉस्पीटल के रूप में विकसित किया गया है। पटना एम्स, आई॰जी॰आई॰एम॰एस॰, पी॰एम॰सी॰एच॰ आदि को भी सुविकसित करने के लगातार प्रयास हो रहे हैं, ताकि असाध्य रोगों की चिकित्सा के लिए बिहारवासियों को राज्य से बाहर नहीं जाना पड़े। मुझे लगता है, स्वास्थ्य–सुविधाओं के विकास हेतु निजी क्षेत्र में भी निवेश की आवश्यकता है। प्राइवेट अस्पतालों को भी कम खर्च पर बेहतर चिकित्सा–सुविधाएँ उपलब्ध करानी चाहिए। अभिवंचित वर्ग के रोगियों या बी॰पी॰एल॰ सूची में सूचीबद्ध परिवारों के रोगियों के लिए प्राइवेट अस्पतालों में भी काफी कम खर्च पर चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए।

मित्रों! चिकित्सा एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें ऐसे निरन्तर शोध–कार्यों की जरूरत है, जो जन–कल्याणकारी होने के साथ–साथ, कम खर्च पर भी आधारित चिकित्सा–पद्धति को विकसित करने में सहायक हों। वस्तुतः 'मिरगी' रोग पर आधारित

इस सम्मेलन में भी यह विचार होना चाहिए कि इस रोग से संबंधित जन–जागरूकता विकसित करने के साथ–साथ, इसके नियंत्रण हेतु बेहतर चिकित्सा–व्यवस्था कैसे सुनिश्चित की जाय? किसी भी रोग की स्वास्थ्य–सुविधा जबतक समाज में अंतिम पायदान पर खड़े गरीब व्यक्ति तक नहीं पहुँच जाती, हमें निश्चिन्त रूप से नहीं बैठना है। मुझे विश्वास है यह सम्मेलन इस रोग से मुक्ति की दिशा में एक सार्थक प्रयत्न के रूप में याद किया जाएगा। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द !!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।